arunjaity1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:06 PM Page 172

अंतिम प्रणाम, जगत के नाना

चित्रकूट में नानाजी ने विश्वामित्र की तरह नव सृष्टि का निर्माण किया था। नानाजी चित्रकूट के लिए वरदान थे। उनका वहां का वास्तव्य व अस्तित्व गांववासियों के लिए अभिमान का विषय था।

नानाजी नही रहे। 27 फरवरी की शाम को देश में सभी कार्यकर्ताओ तक यह दुखद समाचार पहुंच गया था। चित्रकूट ही उनके जीवन के अंतिम समय की कर्मभूमि रही थी। इसी भूमि पर अंतिम सांस लेने की बात नानाजी कहते थे। कुछ माह पूर्व नानाजी चित्रकूट में बीमार हुए। उस वक्त नुस्ली वाडिया विशेष विमान से उन्हें दिल्ली ले आए अर्थात् ऐसी व्यवस्था करना उनके लिए कभी भी संभव था। लेकिन उस समय चित्रकूट छोड़ने से वे साफ इनकार कर रहे थे और इसी कारण उनका अंतिम संस्कार चित्रकूट में ही होगा, यह मानकर कार्यकर्ता वहां पहुंचने की तैयारी में जुट गये। दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकर्ता चित्रकूट जाने के लिए शाम 5.30 बजे रेलगाड़ी में सवार हो गये, उन्हें बाद में सूचना देकर वापस दिल्ली बुला लिया गया। नानाजी ने देहदान करने संबंधी मृत्युपत्र लिखा था। इसकी जानकारी सभी को थी। वरिष्ठ कार्यकर्ताओ ने दिल्ली के ऑल इंडिया इंस्टीटयूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एम्स) को देहदान करने का फैसला किया। दिनांक 28 फरवरी 2010 की दोपहर 3 बजे उनका पार्थिव देह दिल्ली लाया जाना था, जिसकी कार्यकर्ता प्रतीक्षा कर रहे थे। अनेक लोगों के हाथ में नानाजी के मृत्युपत्र की फोटोकापी थी। उनके आंसुओ से वह कागज भीग रहा था। जीवनपर्यंत सामाजिक जीवन परिवर्तन हेतु कार्यरत नानाजी मृत्यु के माध्यम से भी एक संदेश दे रहे थे। अंत्य संस्कार हेतु एकत्रित हुए आप्तजनों को वह बता रहे थे कि देहदान ही मेरा अंतिम संस्कार है। इसके पश्चात किसी तरह के विधि की आवश्यकता नही है। जीवन जीना सार्थक करनेवाले नानाजी ने मृत्यु को भी एक नया अर्थ दिया था। एक चैतन्यदायी जीवन का पूर्ण विराम भी किस तरह से जीवंत रह सकता है, इसका प्रमाण वह मृत्युपत्र दे रहा था।

चित्रकूट में नानाजी ने विश्वामित्र की तरह नव सृष्टि का निर्माण किया था। नानाजी चित्रकूट के लिए वरदान थे। नानाजी और ग्रामीणों में एक-दूसरे के प्रति प्रगाढ़ प्रेम था। आपस में झगड़ा करने की अपेक्षा हर एक को सहायता कर विकास किस तरह से किया जाये, इसका पाठ नानाजी ने पढ़ाया। नानाजी उनके लिए माता-पिता के समान थे। उनका वहां का वास्तव्य व अस्तित्व गांववासियों के लिए एक अभिमान का विषय था और इसीलिए नानाजी की मृत्यु चित्रकूटवासियों के लिए गहरा आघात थी। अब नानाजी चित्रकूट में नही होगे, यह कल्पना असहनीय थी। प्रेम व श्रद्धा से परिपूर्ण हजारों शोकमग्न जनसमुदाय का मानना था कि उनका अंतिम संस्कार चित्रकूट में ही हो और चित्रकूट में ही उनकी समाधि बनायी जाये। वहां के लोग इस जिद पर अड़े हुए थे। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओ ने उनको समझा कर उनका समाधान किया। उसके बाद मुख्यमंत्री स्वयं विशेष विमान से उनके पार्थिव शरीर को दिल्ली ले आये।

दो बड़ी बीमारियों से नानाजी ठीक हो गये थे। पेसमेकर लगा था। दो-तीन वर्ष से आँखो से बिल्कुल ही नहीं दिखता था, ठीक से सुनाई भी नही देता था, व्हीलचेयर पर ही बैठकर चलना पड़ता था। लेकिन संवाद और सक्रियता कायम थी। व्यक्ति की आवाज से उन्हें पहचान लेते थे। स्मरणशक्ति कायम थी। आवाज भी ठीक था। पत्र-व्यवहार भी चलता ही रहता था। आठ दिन पूर्व ही नानाजी का पत्र मिलने की बात गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी बता रहे थे। 13, 14 मार्च को कार्यकर्ताओ का चित्रकूट में शिविर है। नानाजी उसमें मार्गदर्शन करनेवाले थे। 27 को ही नानाजी का स्वास्थ्य बिगड़ गया। भोजन व विश्रांती हुई। दोपहर 3.30 बजे अल्पाहार लिया। संतरे का रस लिया। साधारणतः 4 बजे लघुशंका के लिए गये, तब उनको श्वास लेने में तकलीफ होने लगी। डॉक्टर ने सीने में पंपिंग कर श्वास को ठीक किया। नाड़ी, ब्लड प्रेशर, शुगर सब ठीक था। कफ हो गया था। फिर से तकलीफ ना हो, इसलिए कफ निकालने के लिए डाक्टर उन्हें हॉस्पिटल ले गये। टेबल पर लेटते ही नानाजी ने पूछा, हेमंत तुम कहां हो? नानाजी मैं आपके पास ही खड़ा हूँ। ऐसा उत्तर देने के बाद डाक्टर ने नली लगाने के लिए मुंह खोला और वह खुला ही रह गया। नानाजी की मृत्यु एक क्षण में ही कैसे हो गई? यह उपस्थित लोगों के समझ में नही आया। सायं 4 से 4.50 के पचास मिनट में ही 94वे वर्ष के नानाजी शांत हो गये थे। उनकी मृत्यु का समाचार अनपेक्षित और स्तब्ध कर देने वाला था।

रवींद्र देशपांडे

कुछ ही समय में दीनदयाल शोध संस्थान के भवन में नानाजी का पार्थिव पहुँचनेवाला था। हमेशा उत्साह और उमंग से भरा यह भवन स्तब्ध हो गया था। 94 वर्ष के नानाजी ने अपने विलक्षण जीवनशक्ति से इस भवन का चैतन्य बनाये रखा था। जिसको 24 घंटे भी कम पड़ते है, ऐसा युवा और जिस को 24 घंटे काम के बिना काटना कठिन होता हो, ऐसा वृद्ध, ऐसी नानाजी की परिभाषा थी। उनकी तेज गति का अनुभव करनेवाला यह भवन आज रुक गया था। हमेशा सिर्फ दूसरो का विचार करनेवाला, हर एक को अपार माया और स्नेह देने वाला भवन आज पहली बार अपने लिए आंसु बहा रहा था। कई लोगों को मजबूत आधार देने वाला यह भवन आज स्वयं संभ्रमित था। वहां पर एकत्रित हुए व्यक्तियों की मौन भीड़ में वह नानाजी को तलाश रहा था। वहां पर इकट्ठा हुए अनेक कार्यकर्ता इस बात के गवाह थे कि इस भवन ने नानाजी के जीवन के अनेक स्थित्यंतरो को देखा है। दीनदयाल जी की हत्या के बाद नानाजी ने दीनदयाल शोध संस्थान की यह भव्य भवन का निर्माण किया और शोध संस्थान का कार्य प्रारंभ किया। यज्ञकुंड में आहुति दे रहे पूजनीय गुरूजी का चित्र बहुत लोकप्रिय हुआ। वह चित्र मूलतः इसी भवन की भवन-शांति के अवसर का है। इस भवन की भवन-शांति पू. गुरूजी के करकमलों से हुई थी। उस समय से राष्ट्रीय स्वाहा का जीवनयज्ञ इस भवन को याद आ रहा था। दीनदयाल शोध संस्थान के पूर्व सचिव सुब्रह्मण्यम स्वामी अन्त्यदर्शन के लिए आये। आपतकाल की लड़ाई जिस हिम्मत से इस भवन ने लड़ी, उसका इतिहास में दूसरा कोई विकल्प नही। नानाजी का संपर्क इतना जबरदस्त था कि आपातकाल की घोषणा होने के पहले ही इस भवन को यह समाचार मिला हुआ था। नानाजी तत्काल वहां से निकल गये। इस लड़ाई में नानाजी का साथ देने वाली डॉ. रागिनी जैन अपने आँसुओ को नही रोक पा रही थी। उस समय डॉ. रागिनी को संतान हुए सिर्फ १० दिन ही हुए थे। अत्यंत सुंदर, आकर्षक और साहसी व्यक्तित्व डॉ रागिनी के साथ कभी कंपाउंडर बन कर तो कभी ड्राइवर बनकर नानाजी प्रवास करते थे। बैठकें भी लेते थे। आपातकाल के विरुद्ध हो रहे संघर्ष के नानाजी नायक थे। संस्थान के कार्यालय में समाचार पत्र में प्रसिध्द हुए लेख और समाचारों की कतरनें कार्यकर्ताओं ने दीवार चिपकायी हुई थी। इंडियन एक्सप्रेस में आर्किटेक्ट ऑफ एंटी इमर्जेंसी स्ट्रगल शीर्षक से समाचार छपा था। केंद्रीय मंत्रिपद नही लेने का निर्णय इसी स्थान पर लिया गया था। लाल बत्ती की गाड़ी नानाजी ने दुकराई थी, लेकिन उनके अन्त्य दर्शन के लिए आज कई सौ की संख्या में गाड़ियां खड़ी थी।

> **जिसको 24 घंटे भी कम पड़ते है, ऐसा युवा और जिस को 24 घंटे काम के बिना काटना कठिन होता हो, ऐसा वृद्ध, ऐसी नानाजी की परिभाषा थी। उनकी तेज गति का अनुभव करनेवाला यह भवन आज रुक गया था।**

एक राजकीय नेता के राजनीति छोड़ सर्वांगीण विकास के लिए कृतसंकल्प होने का विश्व का अनोखा उदाहरण इसी भवन ने देखा। उनके इस संकल्प के कई नये-पुराने सहकारी आज यहां एकत्रित थे। उसमे 32 वर्ष पहले शुरू किये गये गोंडा प्रकल्प में पहले दिन से काम करनेवाले मृदुल व गणेश पाठक, नीलम व सुरेश देशपांडे से लेकर अभी हाल ही में काम शुरू करनेवाले सबका समावेश है। इन सबको प्रेरणा देनेवाली एकमेव शक्ति थे- नानाजी देशमुख। उनका आवास था दीनदयाल शोध संस्थान। आज हम अनाथ हुए जैसा भाव सबके मन में था। नानाजी ने स्वयं की गृहस्थी कभी नही जमाई, लेकिन वह हजारो परिवार के सचमुच के नाना थे। सुबह जे. आर. डी. टाटा के यहां भोजन करनेवाले नानाजी उसी आत्मीयता से झोपड़ी में दरी पर बैठकर किसी कार्यकर्ता के यहां भोजन करते थे। यह प्रसिद्धि के लिए किया गया नाटक नही होता था। यह उनकी जीवनशैली थी। इसलिए आज सभी कार्यकर्ता एक-दूसरे के कंधे पर सिर रख कर